सुमी

चैताली

'सुमी, ओ सुमी! कहां चली गयी? एक बालटी पानी तो ले आ!' राधा ने तीसरी बार सुमी को आवाज़ दी। सोमा को सब लोग सुमी बुलाते हैं वह राधा और रघु की बारह साल की बेटी है।

बंगाल की दक्षिण 24 परगणा के काकद्वीप से लगभग 5 किलोमीटर दूर है सुमी का गांव।

राधा का पति रघु मज़दूर है। कुछ भी काम मिले तो कर लेता है। आसपास के शहर कोलकाता, हलदिया गांव से बहुत दूर हैं। काम मिलता है तो घर वापस आने में आठ-दस दिन लग जाते हैं। पर आजकल तो काम कम ही मिलता है। ज़्यादातर समय घर में बैठना पड़ता है। ज़मीन है नहीं। तीन-तीन बच्चे हैं। दो वक्त का भात जुटाने में ही ज़िंदगी गुज़र रही है। भात हो तो नमक नहीं मिलता। बच्चों को हर दो मिनट में भूख लगती है। पता नहीं कहां से इतनी भूख लाते हैं? ऊपर से बूढ़ी सास। महाजन से उधार लेकर कल दो किलो चावल लायी थी। उसमें से थोड़ा सा बचा हुआ है। आज सबका पेट नहीं भरेगा उसमें।

अपने नसीब को कोसती हुई, तीन महीने की बेटी को गोद में लेकर राधा अंदर से बाहर आकर सुमी के पीठ पर दो हाथ मारती है।

'कब से बुला रही हूं। सुनाई नहीं दे रहा है? ऐसा ही करेगी तो भेज दूंगी दिल्ली।' सुमी सहम जाती है, उसकी आंखों में पानी आ जाता है।

मां की मार से नहीं, मां की दिल्ली भेजने वाली बात से सुमी डर जाती है। उसे पता है मां की इस धमकी के पीछे एक बड़ी वजह है। दस दिन पहले कमला बुआ दिल्ली से गांव आयी थीं। बुआ दिल्ली में घरों में काम करती है। कह रही थी पांच-छः घरों में काम करके 2500 रुपए महीने कमा लेती है। सुमी के परिवार के लिए यह बहुत बड़ी रकम है। बुआ की बेटी सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहनती है। सुमी को तो दुर्गा पूजा पर भी कुछ नया नहीं मिलता।

कमला बुआ का पति भी दिल्ली में काम करता है। वह छः साल पहले दिल्ली गया था। छः-सात महीने बाद वापस आकर पूरे परिवार को भी दिल्ली ले गया। दरअसल कमला की ननद पहले से ही दिल्ली में रहती थी। उसने ही कमला के परिवार को काम तलाश करने में मदद की थी। कमला हर एक-दो साल बाद अपनी मां से मिलने गांव आती है।

राधा ने इस बार विस्तार से अपनी हालत कमला के सामने बयान की। हो सकता है कमला का पति रघु के

लिये भी दिल्ली में कोई काम ढूंढ दे! कमला ने राधा को निराश नहीं किया 'रघु को दिल्ली में काम तो मिल जाएगा, पर इस बारे में मुझे ज़्यादा पता नहीं है। तू चाहे तो सुमी को मेरे साथ भेज सकती है। इस बार गांव आने से पहले मेरी मालकिन की सहेली, 12-13 साल की लड़की को काम पर रखने के लिए कह रही थीं। उनके घर में सारा दिन काम करने के लिए एक लड़की की ज़रूरत है। जो लड़की काम करती थी उसकी शादी हो रही है इसलिए उन्हें नई कामवाली चाहिए।'

'अच्छा! सुमी को क्या-क्या काम करना पड़ेगा? सुमी छोटी है न। कभी इतना काम किया नहीं है। पता नहीं कर पाएगी या नहीं।'

'अरे पगली, चिंता मत कर। गांव जैसा काम वहां थोड़े करना है! बस बच्चों के साथ रहना है और कभी-कभार घर के काम में हाथ बंटाना है।'

'पैसा कितना मिलेगा?' राधा ने पूछा।

'मैं बात करके 400 रुपए महीना तय कर लूंगी। तू बस रघु से बात कर। बाकी का काम मैं देख लूंगी।'

उसी दिन रात में राधा ने रघु से बात की। अपने काम के लिये तो रघु राज़ी हो गया, पर बेटी के लिये 'हां' नहीं कह पाया। राधा भी मन से तैयार नहीं हो पा रही थी। आखिर में तय हुआ की रघु दिल्ली में काम की तलाश करेगा। उसके बाद अगर सुमी के लिए कोई काम सही लगा तब देखा जाएगा।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। कमला बुआ ने किसी न किसी तरह रघु व राधा दोनों को मना ही लिया। मनाने में ज़्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ी। बेटी को भर-पेट खाने को मिले, हाथ कुछ पैसा भी आए तो बुराई-भलाई कहां सोच पाता है इंसान।

सुमी दिल्ली आ गई। पहले-पहल वह एक कोठी में ही रहकर काम करती थी। शुरू-शुरू में घर की याद आती थी, बहुत रोना भी आता था। अकेले सोने में डर लगता था। खाना से पेट नहीं भरता था। मालिक लोग कम खाते हैं। और मांगने की हिम्मत नहीं होती। शर्म भी आती थी। सारा दिन-रात सलवार-कमीज़ पहननी पड़ती थी। बहुत गर्मी लगती थी। देर रात तक जागना पड़ता था। मालिक ग्यारह बजे से पहले खाना नहीं खाते थे! उन लोगों के खाने के बाद सफाई करके, रसोई का काम समेट कर ही सुमी सोने के लिए जाती थी। वह खाना खाने वाले कमरे में ही सोती थी।

आज भी उन सब दिनों के बारे में सोचकर बुरा लगता है सुमी को। उसे दिल्ली आए हुए अब 14 साल हो गए हैं। उसकी शादी हो गई है, एक बेटी भी है। पर आजकल सुमी पूरे दिन घर में रहकर काम नहीं करती। वह चार-पांच घरों में पार्ट-टाईम काम करती है। सुबह घर से निकलो और शाम तक वापस आ जाओ। उसकी सास भी कोठियों में खाना पकाने का काम करती थी। अब वह सारी कोठियां सास ने सुमी को दे दी हैं। सुमी की कमाई से ही घर चलता है। पति को कभी-कभी काम मिलता है। उससे घर नहीं चलता। वह जितना कमाता है वह तो यार-दोस्तों के साथ पीने -पिलाने में ही खर्च हो जाता है। पहले लगता था कि बस बहुत हुआ, सब छोड़कर कहीं भाग जाए, पर जैसे-जैसे दिन बीतते गए सुमी को इस ज़िंदगी की आदत पड़ गयी।

सुबह चार बजे उठना, सारा काम खत्म करके रात बारह बजे सोना। पूरा दिन इतना काम होता है कि अपने बारे में सोचने तक की फुरसत नहीं मिलती। सुबह मजबूरी में उठना पड़ता है। काम पर जाने में देर हो जाएगी तो काम से निकाल दिया जाएगा। फिर खाएंगे क्या? गुज़ारा कैसे होगा? परिवार की थोड़ी सी बेहतर ज़िंदगी के लिए दो कोठियां और ज्यादा पकड़ी हैं। जिस तरह से झुग्गियों को तोड़ा जा रहा है, उसको देखते हुए घर का भी कोई ठिकाना नहीं रहा है।

आज बच्चे जिस स्कूल में जाते हैं, पता नहीं कल जा पाएंगे या नहीं? आज जो दो-चार पैसे पति घर में देता है, वह कल देगा या नहीं? कल कोठियों में काम रहेगा या नहीं? आज जो सांस ले पा रहे हैं वह कल ले पाएंगे या नहीं? न जाने ऐसे कितने सवाल बस की खिड़की के पास बैठकर दिमाग में उथल-पुथल मचाते रहते हैं। घुटन से दिल भारी हो जाता है। मानो सारी हवा बंद हो गयी है। कहीं तूफान तो नहीं आएगा?

फिर मन कहता है, आने दो, खोखले सूखे पत्तों को गिर जाने दो। कम से कम कोई नन्हा छोटा हरा पत्ता देखने को तो मिलेगा! सोच कर अच्छा लगता है। उम्मीद की किरण आंखों में जगमगाने लगती है। और एक निश्चय के साथ सुमी के कदम सरपट अपने गंतव्य की ओर बढ़ जाते हैं।